सर्वदर्शनसंग्रह; जैनमत, बौद्धमत –

जैनमत (आर्हत) –

हेमचन्द्र (१०८८ - ११७२ ई.)

ग्रन्थ - प्रमाणमीमांसा, शब्दानुशासन

→ 'कलिकालसर्वज्ञ' की उपाधि

→ 'सर्वमनेकान्तात्मकं सत्त्व। दिति व्याप्तिज्ञानोश्च।'

→ सभी वस्तुएँ अनेकान्तात्मक (अनिश्चित) हैं, क्योंकि उनकी सत्ता है।

आवरणों को नष्ट करने के उपाय →

"सम्यग्दर्शनादित्रयलक्षणस्यावरणप्रक्षय हेतुभूतस्य सामग्रीविशेषप्रतीतत्वात्"

सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र

इन तीन रत्नों के धारण से आवरण प्रक्षीण हो जाते हैं। मोक्ष का मार्ग खुल जाता है।

त्रिरत्नों का वर्णन →

"सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः"

सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र मोक्ष के मार्ग हैं।

सम्यक् दर्शन आदि त्रिरत्नों का निरूपण 'परमागमसार' नामक ग्रन्थ में हुआ है।

'तत्त्वार्थाधिगम सूत्र' – उमास्वाति का।

१. सम्यक् दर्शन →

'श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्' (तत्त्वार्थसूत्र)

तत्त्वार्थ में श्रद्धा रखना ही सम्यक् दर्शन कहलाता है।

रुचिर्जिनोक्ततत्त्वेषु सम्यक् श्रद्धानमुच्यते।
जायते तन्निसर्गेण गुरोरधिगमेन वा॥

REDMI NOTE 8

जिनदेव के द्वारा कहे गये तत्त्वों में रुचि होना सम्यक् दर्शन (सम्यक् श्रद्धान्) कहलाता है। वह या तो निसर्ग (स्वभाव) से ही उत्पन्न होता है, या गुरु के अधिगम (ज्ञान) से।

निसर्ग → "परोपदेशनिरपेक्षमात्मस्वरूपं निसर्ग:"
दूसरों के उपदेश की अपेक्षा न रखने वाले आत्म-स्वरूप (स्वभाव) का नाम 'निसर्ग' है।

अधिगम → "व्याख्यानादिरूपबाह्योपदेशजनितं ज्ञानमधिगम:"
व्याख्यानादि के रूप में दूसरों के उपदेश से उत्पन्न ज्ञान 'अधिगम' कहलाता है।

२. सम्यक् ज्ञान →
"येन स्वभावेन जीवादय: पदार्था: व्यवस्थितास्तेन स्वभावेन मोहसंशयरहितत्वेनावगम: सम्यग्ज्ञानम्।"

जिस स्वभाव से रूप में जीव आदि पदार्थ व्यवस्थित हैं उसी रूप में मोह (भ्रम) तथा संशय से रहित होकर उन्हें जानना सम्यक् ज्ञान है।

यथावस्थिततत्त्वानां संक्षेपाद्विस्तरेण वा ।
योऽवबोधस्तमत्राहु: सम्यग्ज्ञानं मनीषिण: ।।
तत्त्वों का, उनकी अवस्था के अनुरूप संक्षेप या विस्तार से जो बोध होता है उसे ही विद्वानलोग 'सम्यग्ज्ञान' कहते हैं।

सम्यक् ज्ञान के पाँच प्रकार → "तज्ज्ञानं पञ्चविधं मति।
श्रुतावधिमन: पर्ययकेवलभेदेन ।।"

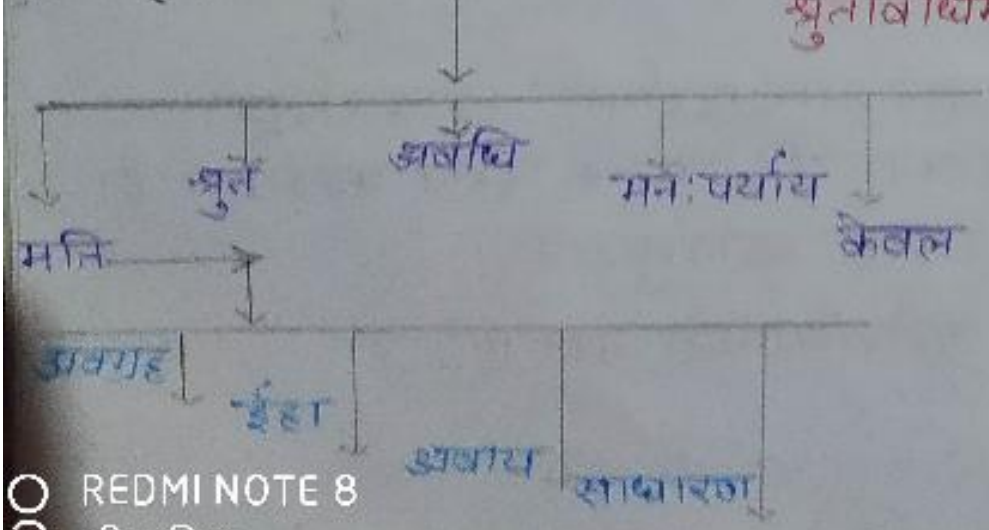

REDMI NOTE 8

3. सम्यक् चारित्र → "संसरणकर्मोच्छितावुद्यतस्य श्रद्धानस्य ज्ञानवत: पापगमनकारणक्रियानिवृत्ति: सम्यक् चारित्रम्"

संसार के प्रवर्तन के कारणस्वरूप कर्मों के नष्ट हो जाने पर उद्यत (पाप नाश के लिए) श्रद्धावान् (प्रथम रत्न से युक्त) तथा ज्ञानवान (द्वितीय रत्न से युक्त) पुरुष का पाप में ले जाने वाली क्रियाओं से निवृत्त (पृथक्) हो जाना ही सम्यक् चरित्र है।

सर्वथाबध्ययोगानां त्यागश्चारित्रमुच्यते ।
कीर्तितं तदहिंसादिव्रतभेदेन पञ्चधा ।।

अहिंसासूनृतास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा: ।।

पाप के साथ सम्बन्ध का सब प्रकार से त्याग करना चारित्र है। अहिंसा आदि व्रतों के भेद से वह पाँच प्रकार है, वे हैं - अहिंसा, सूनृत(सत्य), अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

ये पाँच महाव्रत संसार के अक्षय (स्थायी) पद की सिद्धि करते हैं।

'महाव्रतानि लोकस्य साधयन्त्यव्ययं पदम्'
'एतानि सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मिलितानि मोक्षकारणं न प्रत्येकम्'

ये सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र मिलकर मोक्ष का कारण बनते हैं, प्रत्येक पृथक्-पृथक् नहीं।

जैन तत्त्वमीमांसा - दो तत्त्व

संक्षेपस्तावज्जीवाजीवारव्ये द्वे तत्वे स्त: ।
संक्षेप में जीव और अजीव नाम के दो तत्त्व हैं।

जीव → बोधात्मको जीव:
(ज्ञान के रूप में जीव है)

अजीव → अबोधात्मस्त्वजीव:
(अज्ञान के रूप में अजीव है)

REDMI NOTE 8

जीव के दो प्रकार → १. संसारी २. मुक्त
तत्र जीवा: द्विविधा: संसारिणोमुक्ताश्च।

१. संसारी – भवाद्भवान्तरप्राप्निमन्त: संसारिण:
एक जन्म से दूसरे जन्म की प्राप्ति करने वाले जीव संसारी कहलाते हैं।

संसारी जीव भी दो प्रकार के होते हैं –
समनस्क और अमनस्क

१. समनस्क → संज्ञायुक्त जीव समनस्क कहलाते हैं।
संज्ञिन: समनस्का:, गन्धर्व, मनुष्य, हाथी, घोड़ा, बन्दर, तोता आदि।

२. अमनस्क → ये जीव संज्ञा से रहित होते हैं।
इसके दो भेद होते हैं - 'त्रस स्थावर'।
'अमनस्क द्विविधा:- त्रसस्थावरभेदात्।'

त्रस जीवों के ४ प्रकार हैं –

१. द्वीन्द्रिय → (स्पर्श और रसना दो इन्द्रियों से युक्त)
जैसे - शंख, गण्डोलक, शुक्ति, कृमि आदि।

२. त्रीन्द्रिय → (त्वक् रसना घ्राण से युक्त)
पिपीलिका (चींटी), यूका (जोंक) आदि।

३. चतुरिन्द्रिय → (त्वक्, रसना, घ्राण, चक्षु)
देंश, मशक, भ्रमर आदि।

४. पञ्चेन्द्रिय → (त्वक्, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण)
मनुष्य, पशु, पक्षी, आदि।

पृथ्वी, जल, तेज, वायु और वनस्पति स्थावर हैं।

पुद्गल → स्पर्शरसगन्धवर्णवन्त: पुद्गल:।
ते च द्विविधा:- अणव: स्कन्धाश्च॥
स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से युक्त पुद्गल होते हैं।
ये दो प्रकार के होते हैं - अणु और स्कन्ध।

REDMI NOTE 8

→ काल भी एक द्रव्य है -

'कालस्यानेकप्रदेशत्वाभावेन अस्तिकायत्वाविड द्रव्यत्वमस्ति ।'

यद्यपि काल अनेक स्थानों में अवस्थित न होने के कारण अस्तिकाय नहीं है फिर भी यह द्रव्य है।

द्रव्य → 'गुणपर्यायवद् द्रव्यम्' गुण और पर्याय से युक्त द्रव्य होता है।

आर्हत दर्शन के सात तत्व - केचन् सप्त- तत्वानि इति वर्णयन्ति - तदाह

जीवाजीवास्रवबन्धनसंवरनिर्जरमोक्षस्तत्वानि

जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष

आस्रव → "औदारिकादिकायादिचलनद्वारेण आत्मनश्चलनं योगापदवेदनीयमास्रव:"

औदारिक आदि कार्यों तथा दूसरे साधनों के चलने से आत्मा का चलना, जिसे योग भी कहते हैं, आस्रव है।

बन्ध → 'सकषायत्वाज्जीव: कर्मभावयोग्यान् पुद्गलान् आदन्ते स बन्ध।'

सकषाय रहने के कारण जीव कर्मों के भाव (परिणाम) के अनुकूल, पुद्गलों (शरीरों) का ग्रहण करता है, बन्ध।

बन्धन के हेतु (बन्धन के कारण) –

"मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगाबन्धहेतव:"

मिथ्या दर्शन (झूठा विश्वास), अविरति, प्रमाद (लापरवाही) कषाय (पाप) तथा योग बन्ध के हेतु हैं।

बन्धन के भेद →
1. प्रकृतिबन्ध
2. स्थितिबन्ध
3. अनुभवबन्ध
4. प्रदेशबन्ध

REDMI NOTE 8

संवर → आश्रव निरोध: संवर:

आस्रव का निरोध हो जाना संवर है।

"आस्रव: स्रोतसो द्वारं संवृणोतीति इति संवर:"

आस्रव स्रोत का दरवाजा है, उसे जो ढक देता है वही संवर है।

निर्जरा → "अर्जितस्य कर्मणस्तप: प्रभृतिभिर्निर्जरणं निर्जराख्यं तत्वम्।"

जो कर्म अर्जित किया गया हो उसे अपनी तपस्या इत्यादि से नष्ट कर देना 'निर्जरा' नामक तत्व है।

मोक्ष → 'बन्धहेतवनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षणं मोक्ष:'

बन्ध के कारणों का अभाव (संवर) तथा निर्जरा से सभी कर्मों से बच जाना 'मोक्ष' है।

जैन लोग मोक्ष के दो कारण मानते हैं – संवर और निर्जरा।

सप्तभङ्गिनय / सप्तभङ्गनय / सप्तभङ्गिनय →

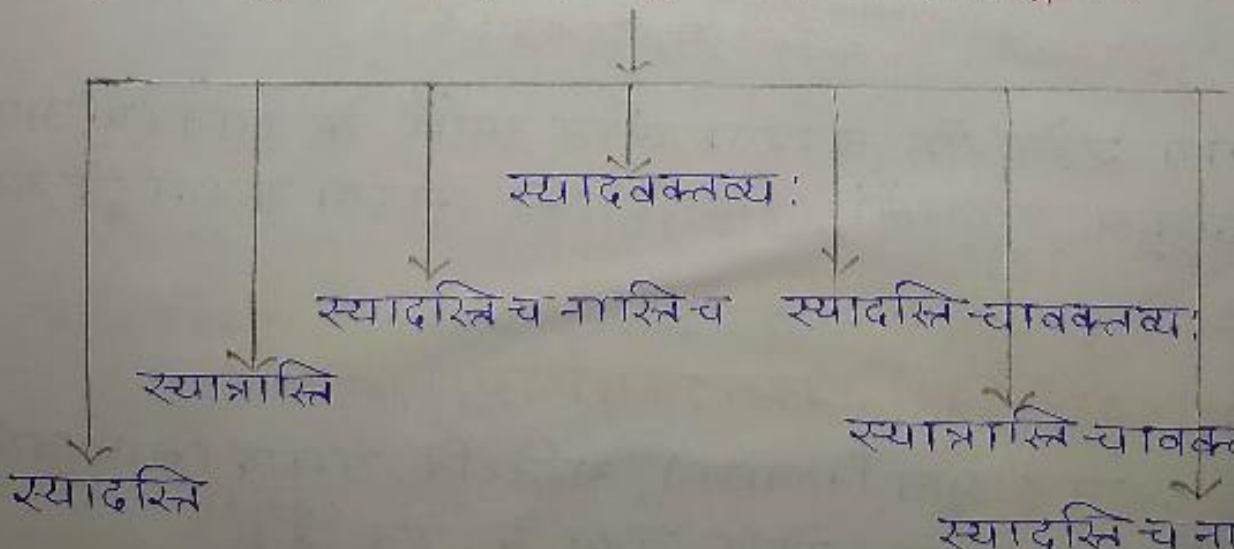

→ बल, भोग, उपभोग (इन्द्रियसुख), दान तथा लाभ के अन्तर, निद्रा, भय, अज्ञान, घृणा, हिंसा, रति (इच्छा), अरति (अनिच्छा), राग, द्वेष, अविरति (वैराग्यहीनता), काम, शोक, मिथ्यात्व।

ये १८ दोष जिनके पास नहीं हैं, वह देवता-स्वरूप हम लोगों का जिन (जितेन्द्रिय) गुरु सम्यक् रूप से तत्वज्ञान का उपदेशक है।

'ज्ञानदर्शनचारित्राण्यपवर्गस्य वर्तनी'

सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र - ये अपवर्ग के मार्ग हैं।

ज्ञान सम्मोहरहित ज्ञान
दर्शन अर्हन्मुनि के उपदिष्टमत में विश्वास
चारित्र पापकर्म से विरति
वर्तनी मार्ग।

स्याद्वादस्य प्रमाणे द्वे प्रत्यक्षमनुमापि च।
स्यादवाद के सिद्धान्त में दो प्रमाण हैं - प्रत्यक्ष और अनुमान

जैन दर्शन में तत्व नव/सात हैं -

नित्यानित्यात्मकं सर्व नव तत्वानि सप्त वा।

नवतत्त्व → जीव, अजीव, पाप, पुण्य, आस्रव, संवर, बन्ध, निर्जरण, मोक्ष।

जीवाजीवौ पुण्यपापेचास्रव: संवरोपि च।
बन्धो निर्जरणं मुक्तिरेषां व्याख्याऽधुनोच्यते॥

इन नवों में पुण्य को संवर में तथा पाप को आस्रव में समाहित करने से सात तत्व ही शेष बचते हैं।

"पुण्यस्य संवरे पापस्यास्रवे क्रियते पुन:"

REDMI NOTE 8

आश्रव → पापरूपी स्रोत का द्वार है -
(आस्रव: स्रोतसो द्वारम्)

जो पापों को ढक ले वह संवर कहलाता है।
'संवृणोतीति संवर:'

कर्मों का प्रवेश करना बन्ध है। प्रवेश: कर्मणां बन्ध:
और उनसे अलग हो जाना मोक्ष है -
'निर्जरस्तद्वियोजनम्।'

आठ प्रकार के कर्मों का क्षय हो जाने पर मोक्ष मिलता है। (अष्टकर्मक्षयात् मोक्ष:)

जैनों के प्रसिद्ध भेद - श्वेताम्बर और दिगम्बर

श्वेताम्बरा: क्षमाशीला नि:सङ्ग: जैनसाधव:।
लुञ्चिता: पिच्छिकाहस्ता: पाणिपात्रा दिगम्बरा:॥

दिगम्बर साधुओं की मान्यता है कि स्त्री को भी मोक्ष नहीं मिलता - स्त्रीमोक्षमेति दिगम्बरा:।

बौद्धदर्शन

बौद्धदर्शन के चार भेद →

(भावना चतुष्टय) (चार प्रस्थान)

→ ते च बौद्धाः चतुर्विधया भावनया परमपुरुषार्थं कथयन्ति

→ ते च माध्यमिक योगाचार सौत्रान्तिक - वैभाषिकसंज्ञाभिः प्रसिद्धा बौद्धा यथाक्रमं सर्वशून्यत्व - बाह्यार्थशून्यत्व - बाह्यार्थानुमेयत्व - बाह्यार्थप्रत्यक्षत्ववादान् अतिक्रान्ते।

→ ये बौद्ध लोग चार प्रकार की भावना (दृष्टिकोण) से परम पुरुषार्थ का वर्णन करते हैं।

चार प्रस्थान	सिद्धान्त
(1-) माध्यमिक (शून्यवाद)	सर्वशून्यत्वम्
(2-) योगाचार (विज्ञानवाद)	बाह्यार्थशून्यत्वम्
(3-) सौत्रान्तिक	बाह्यार्थानुमेयत्वम्
(4-) वैभाषिक (सर्वास्तिवादी)	बाह्यार्थप्रत्यक्षत्ववादम्

माध्यमिक और योगाचार (महायान) हैं।

सौत्रान्तिक और वैभाषिक (हीनयान) हैं।

बौद्धों की चारों भावनायें (दृष्टिकोण) इस प्रकार उपदिष्ट हुई हैं—

1- सर्वं क्षणिकं क्षणिकम् → सब कुछ क्षणिक है, क्षणिक।

2- दुःखं दुःखम् → सब कुछ दुःख है दुःख।

3. स्वलक्षणं स्वलक्षणम् - सबों का लक्षण अपने आप में है।

4. शून्यं शून्यमिति - सब कुछ शून्य है शून्य।

1. माध्यमिक (शून्यवाद)

→ सर्वशून्यत्व - सबकुछ शून्य होना
→ नागार्जुन, आर्यदेव, बुद्धपालित, भाविविवेक, चन्द्रकीर्ति, शान्तिदेव, शान्तिरक्षित
→ महायान से सम्बद्ध
→ माध्यमिक कारिका - नागार्जुन (समय 200 शताब्दी ई.)
→ संसार असत् या शून्य है - दृष्टा, दृश्य, स्वप्न सभी स्वप्न के समान भ्रम है।
→ शून्य का अभिप्राय ऐसा सत् है जो चतुष्कोटि सत्, असत्, सदसत्, अनुभयात्मक से विलक्षण, अनिर्वचनीय है।
शून्यवाद या माध्यमिक सम्प्रदाय के संस्थापक - नागार्जुन।

[2-] योगाचार (विज्ञानवाद) (महायान से सम्बद्ध)

= बाह्यार्थशून्यत्व - बाह्य पदार्थों का शून्य होना।
→ दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, असंग, मैत्रेयनाथ, वसुबन्धु, स्थिरमति, शङ्करस्वामी, धर्मपाल
→ इस मत का प्रसिद्ध ग्रन्थ है - लंकावतारसूत्र।
→ विज्ञान या शुद्ध चैतन्य ही एकमात्र सत् है।
→ इसके अनुसार बाह्य अर्थ तो शून्य है, किन्तु चित्त जो सभी वस्तुओं का ज्ञाता है, कभी भी असत् नहीं हो सकता, अन्यथा हमारे ज्ञान भी असत् हो जायेंगे।
→ योग के बाद मानसिक सत्ता (आलय विज्ञान) के ही स्वीकार करके बाह्य पदार्थों में विश्वास हटा देगा।
→ विज्ञानवाद दो सिद्धान्त → आलयविज्ञान और प्रवृत्तिविज्ञान

[3.] सौत्रान्तिक (हीनयान से सम्बद्ध)

→ बाह्यार्थानुमेयत्व - बाह्य पदार्थों का अनुमान से ज्ञान होना।

सौत्रान्तिक का विशेष सम्बन्ध सूत्र पिटक से है।

इनके अनुसार मानसिक और बाह्य दोनों पदार्थ सत् हैं यद्यपि बाह्य पदार्थों का ज्ञान अनुमान से होता है।

सूत्र पिटक से सम्बद्ध - इसके बहुत से ग्रन्थ सूत्रान्त नाम से ही विख्यात हैं।

→ प्रमुख आचार्य कुमारलात, श्रीलाभ, धर्मत्रात, बुद्धदेव यशोमित्र।

[4] वैभाषिक (सर्वास्तिवादी) [हीनयान से सम्बद्ध]

→ बाह्यार्थ प्रत्यक्षवाद - बाह्य पदार्थों का प्रत्यक्ष से ज्ञान होना।

→ इनके अनुसार - ये बाहरी वस्तुओं को अनुमेय न मानकर वे पूर्णतया प्रत्यक्षगम्य मानते हैं। क्योंकि जब तक उनका प्रत्यक्ष न हो उनकी सत्ता किसी दूसरे साधन से सिद्ध नहीं हो सकती।

→ विभाषा (अभिधर्म महाविभाषा) नामक ग्रन्थ में इनके सिद्धान्त प्रतिपादित हैं, इसीलिए यह वैभाषिक नाम इनका पड़ा।

सभी कालों की सत्ता मानने के कारण 'सर्वास्तिवादी' कहलाते हैं।

→ वसुबन्धु, संघभद्र आदि प्रमुख आचार्य हैं।

आलयविज्ञान और प्रवृत्ति विज्ञान →

→ आलयविज्ञानं नामाहमास्पदं विज्ञानम् ।
नीलाद्युल्लेखि च विज्ञानं प्रवृत्तिविज्ञानम् ॥

वह आलयविज्ञान है जो आत्मा का स्थान है और वह प्रवृत्तिविज्ञान है, जो नीलादि पदार्थों को अभिव्यक्त करता है।

चित्त और उसके विकार पाँच स्कन्ध →

सोऽयं चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो -
रूप-विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्कारसंज्ञकः।

चित्त और चित्त के विकारों के रूप मे यह स्कन्ध (अमूर्ततत्व) पाँच प्रकार का है-

1. रूपस्कन्ध
2. विज्ञानस्कन्ध
3. वेदनास्कन्ध
4. संज्ञास्कन्ध
5. संस्कारस्कन्ध

दुःखं संसारिणः स्कन्धाः ते च पञ्च प्रकीर्तिताः।
विज्ञानं वेदना संज्ञा संस्कार रूपमेव च ॥

बौद्धों के चार आर्यसत्य →

दुःखसमुदायनिरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्य अभिमतानि तत्वानि।

1. दुःख
2. समुदाय
3. निरोध
4. मार्ग

ये चार तत्व आर्य बुद्ध के द्वारा सम्मत हैं।

→ समुदायो दुःखकारणम्

→ प्रतीत्यसमुत्पाद - बौद्धों का उत्पत्ति का सिद्धान्त

→ तदुभयनिरोधः - इन दोनों का (दुःख और दुःख के कारण का) निरोध होता है।

→ तन्निरोधो पायो मार्गः - दुःख को रोकने का उपाय ही मार्ग है।

दुःख निरोध के आठ मार्ग (अष्टांग मार्ग) →

1. सम्यक् दृष्टि (ज्ञान)
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वचन
4. सम्यक् कर्म (पंचशील, दशशील)
5. सम्यक् आजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

बौद्धों का द्वादश आयतन →

ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्चैव तथा कर्मेन्द्रियाणि च।
मनोबुद्धिरिति प्रोक्तं द्वादशायतनं बुधैः॥

विद्वानों ने कहा है कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (नेत्र, कर्ण, त्वक्, रसना, घ्राण) पाँच कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, मुँह, ~~गुदा~~ जननेन्द्रिय, गुदा) मन और बुद्धि - ये ही द्वादश आयतन हैं।

बौद्धों का मार्ग (मोक्ष)

→ क्षणिकाः सर्वसंस्काराः इति या वासना स्थिरा।
स मार्ग इति विज्ञेयः स च मोक्षोऽभिधीयते ॥

सभी संस्कार क्षणिक हैं, यह जो स्थिर वासना (विचार) है, इसे ही मार्ग जानें, इसे मोक्ष भी कहते हैं।

बौद्धों का प्रमाण

→ प्रत्यक्षमनुमानं च प्रमाणद्वितयं तथा।
चतुष्प्रस्थानिकाः बौद्धाः ख्याता वैभाषिकादयः ॥

→ प्रत्यक्ष और अनुमान – ये केवल 2 प्रमाण हैं।

→ माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक बौद्धों के चार प्रस्थान प्रसिद्ध हैं।